# संचार माध्यम

## (संगोष्ठी)

हिन्दी विभाग

गोवा विश्वविद्यालय
तालेगाँव
पणजी – 403005, गोवा

(गोवा विश्वविद्यालय अनुदान द्वारा प्रकाशित)

प्रकाशक

**मिलिन्द प्रकाशन**
4-4-812 कन्दास्वामी बाग
सुल्तान बाजार
हनुमान व्यायामशाला की गली
हैदराबाद - 500 195
फ़ोन : 43159 & 558224

**प्रथम संस्करण** : सन् 1991, दिसम्बर

**मूल्य.** अस्सी रूपये Price 80/-

SANCHAR MADHYAM - Hindi Vibhag, Goa University, Goa
**संचार माध्यम** - हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

# "समाचार आकलन"

डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र

आधुनिक युग में समाचार –पत्र हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। जिसमें समाज, देश और विदेश के सांस्कृतिक उत्थान की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ इसका महत्व और भी बढ़ता जा रहा है। मनुष्य एक संवेदनशील प्राणी है, इसलिए वह कुछ कहने सुनने और जानने के लिए व्यग्र रहता है। अपना विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिए व्यग्र रहता है। अपना विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। विज्ञान के प्रभाव के कारण समाचार–पत्र बहुत ही सुगम और सुलभ साधन बन चुका है।

"समाचार–पत्र" की सुगमता और सुलभता को जानने के पहले समाचार के विषय में जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। मेरे विचार से सामान्य में विशेष को हम समाचार कहते हैं। उदाहरण स्वरुप "राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान" गोवा द्वारा वैज्ञानिकों की एक शोध–कार्यशाला का आयोजन किया गया। अगर इसमें शोध के दौरान किसी वैज्ञानिक की मृत्यु हो जाती है या विज्ञान के क्षेत्र में कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त होती है, तो वह समाचार बन जाता है। शोधकार्य का चलना एक सामान्य बात है परन्तु वैज्ञानिक की मृत्यु और विज्ञान के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि विशेष बात है।

समाचार के विषय में अपने मन्तव्यों से अवगत कराने के पश्चात् मै कुछ पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई परिभाषाओं का उल्लेख करना चाहता हूँ। "जिस सामयिक बात में अनेक व्यक्तियों की अभिरुचि होती है"। वह समाचार है। सर्वश्रेष्ठ समाचार वह है, जिसमें बहुसंख्यक लोगों की अधिकतम रुचि हो। **–प्रो. विलार्ड ब्लेयर**

पर्याप्त संख्या में आदमी जिसे जानना चाहे वह समाचार है। शर्त यह है कि वह सुरुचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करें। **–जे.जे. सिंडलर**

घटनाओं, तथ्यों और विचारों की सामायिक रिपोर्ट, जिसमें पर्याप्त लोगों की रुचि हो, समाचार है। **–विलियम एल. रिवर्स**

उन महत्वपूर्ण घटनाओं की जिसमें जनता की दिलचस्पी हो पहली रिपोर्ट को समाचार कहते हैं। **-इरी. सी. हापवुड**

किसी समय होनेवाली उन महत्वपूर्ण घटनाओं के सही और पक्षपात रहित विवरण को, जिसमें उस पत्र के पाठकों की अभिरुचि हो, समाचार कह सकते हैं। **-विलियम एस. माल्सबाइ**

"समाचार" अति गतिशील साहित्य है। समाचार पत्र समय के करघे पर इतिहास के बहुरंगे बेलबूटेदार कपड़े को बुनने वाले तकुए हैं। **-हार्पर लीच । जान कैरोल**

आधुनिक समाज के एक बहुत बड़े भाग की दिलचस्पी ऐसी बातों या घटनाओं में है, जो पहले नहीं घटी हो। समाचार जीवन और वस्तु के प्रायः सभी महत्वपूर्ण पहलुओं और उसमें होने वाले परिवर्तनों को उजागर करता है। समाचार की नवीनता इसी में है कि वह परिवर्तन की जानकारी दे। यह जानकारी राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक हो सकती है।

समाचार कहाँ और कैसे पैदा होता है ? उसका सर्जक कौन है। यह एक आवश्यक प्रश्न है। इस सम्बन्ध में सुप्रसिध्द पत्रकार ऋषिकुमार मिश्र की स्थापना काफी वजनदार है। मिश्रजी संघर्ष को समाचार का जनक मानते हुए लिखते हैं कि "समाज में किसी भी प्रकार का संघर्ष समाचार का सृजन करता है। यह संघर्ष प्रकृति के विरुद्ध हो सकता है, श्रमिकों का प्रबन्धकों और संचालकों के विरुद्ध हो सकता है। " संघर्ष का तात्कालिक उदाहरण अमेरिका के नेतृत्व में बहुराष्ट्रीय सेनाओं द्वारा इराक पर हमला करना भी दो राष्ट्रों के बीच संघर्ष ही है"। जो कि आज सम्पूर्ण विश्व में समाचार का एक बहुत महत्वपूर्ण अंश बन गया है।

रोज सुबह जब हमारे हाथ में समाचार पत्र पहुँचता है, तो यह देखकर सहज ही जिज्ञासा होती है कि यह समाचार पत्र अनेक विविधताओं से भरा होता है। जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक, अन्तर्राष्ट्रीय, खेल-कूद, वैज्ञानिक एवं अनुसंधान, दुर्घटनाएं, महत्वपूर्ण लेख, विज्ञापन, चल-चित्र, आकाशवाणी और दूरदर्शन आदि सम्बन्धी समाचार भरे रहते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे सम्पादकीय लेख होते हैं, जिसमें सभी सामयिक विषयों एवं समस्याओं के तर्कपूर्ण विवेचन

प्रस्तुत किए जाते हैं। जिसमें हास्य-विनोद के पुट एवं चित्र भी मिलते हैं। जो स्वयं में एक समाचार होते हैं। समाचार पत्रों में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक और वार्षिक समाचार पत्र आते हैं, जो कि विशेष विषय की ही जानकारी देते हैं। जैसे - आर्थिक, चलचित्र, साहित्य, खेल-कूद विज्ञान आदि।

दैनिक समाचार-पत्र दो प्रकार के होते हैं। स्थानीय समाचार पत्र और राष्ट्रीय समाचार पत्र। स्थानीय समाचार-पत्र में देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धी केवल विशेष समाचार होते हैं जो कि सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करते हैं। उदाहरण स्वरूप अमेरिका और इराक का युध्द तथा देश के स्तर पर केन्द्रीय बजट आदि। इसमें मुख्य रूप से स्थानीय समाचारों की प्रधानता होती है।

राष्ट्रीय समाचार पत्र में अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय समाचार होते हैं परन्तु राष्ट्रीय समाचारों को विशेष महत्व दिया जाता है।

यहाँ हमें इस बात पर विशेष ध्यान देना है कि उपर्युक्त समाचारों का आकलन कैसे किया जाता है। समाचार-आकलन का अर्थ है, समाचारों की जानकारी और उनको एकत्र करना। जहाँ-जहाँ समाचारों की संभावना है, वहाँ-वहाँ से उनका संकलन या संग्रह करना यह भी एक कला है। इस कला का उत्तरदायित्व पत्रकारिता पर निर्भर होता है।

समाचार पत्र के प्रकाशन की पूरी प्रक्रिया को व्यवसाय के रूप में पत्रकारिता कहते हैं। यह पत्रकार वर्ग ही होता है, जो समाचारों के संकलन, प्रेषण तथा संपादन का काम करता है। समाचारों के संकलन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है, संवाददाताओं की।

देश के विभिन्न भागों से लेकर विश्व के महत्वपूर्ण स्थानों तक समाचार-पत्रों के संवाददाता होते हैं। जो कि समाचार संकलन का कार्य करते हैं। समाचार संकलन का कार्य बड़ी जोखिम का है। समाचार सत्य हो, सामयिक हो, भावनाओं को छूने वाले हों और परिणामदर्शी हो तभी उनका महत्व है। समाचार एकत्र करनेवाला समाचारों की खोज सचिवालयों, दूतावासों, सड़कों, गलियों, मुहल्लों और बाजारों में घूमता है, समाचार सूंघता है, खोजता है, निकालता और बनाता है। उसका प्रत्येक समाचार उपसंपादक के सामने आता है, जिसे पढ़कर वह कभी मुस्काता है तो कभी नाराज होता है। दोनों को ही स्थित प्रज्ञ बनकर अपनी

भूमिका निभानी पड़ती है। संवाददाता को मानसिक थकान के साथ-साथ शारीरिक थकान भी होती है लेकिन वह उसकी चिन्ता नहीं करता है। वह अपना कर्त्तव्य पालन बड़ी कुशलता के साथ करता है। उसके समाचार कभी क्रान्तिकारी होते हैं, तो कभी मर्मस्पर्शी भी होते हैं।

समाचार, समाचारपत्र का जीवन होता है। उसमें जीवन की जीवन्तता सदैव विद्यमान रहे यह उत्तरदायित्व होता है, संवाददाता का। ऐसे कठिन कार्य के लिए संवाददाता में कुछ विशेष गुणों का होना अनिवार्य है। इन विशेष गुणों के अभाव में समाचार पत्र की महिमा पर आंच भी आ सकती है। उदाहरण स्वरूप एक शहर में किसी एक पत्रकार को सीमेंट की जरूरत थी। अपने किसी दोस्त के लिए, वो मकान बनवा रहे थे। सीमेंट की दिक्कत थी। पत्रकार महोदय अधिकारियों से मिले, लेकिन सीमेंट-की परमिट नहीं मिली। गुस्से में आग-बबुला। बजाय इसके कि दिक्कतों को समझते, दूसरे दिन अखबार में उस अधिकारी के बाबत गलत सही आरोपों का कच्चा चिट्ठा छाप दिया। अधिकारी गण परेशान, क्या करें ? इस प्रकार पत्रकार को अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

एक कुशल संवाददाता का कार्य एक अच्छे साहित्यकार से थोड़ा भिन्न और अधिक दायित्व का होता है। संवाददाता समाज की प्रत्येक गतिविधियों पर नजर रखता है। साहित्यकार स्वानुभूतियों के द्वारा समाज से प्रेरणा प्राप्त कर रचनात्मक दिशा की ओर आगे बढ़ता है। एक के लिए तीव दृष्टि अपेक्षित है और दूसरे में तीव्र दृष्टि के साथ-साथ सहृदयता की भी जरूरत है। पत्रकार की सफलता उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति पर निर्भर करती है, कि वह कितना कुछ नया और ताजा समाचार जान सकता है। एक अच्छे संवाददाता में सहनशीलता, दूरदर्शिता पैनीदृष्टि त्वरितश्रवण शक्ति, धैर्यशीलता, वाकपटु और मृदुभाषी आदि गुणों का होना अनिवार्य है। उपर्युक्त गुणों के अभाव में पत्रकारिता का स्वरूप बदल सकता है। अगर पत्रकार समाचारपत्र को मनमाने ढंग से पेश करना चाहता है तो यह उसकी सबसे बड़ी भूल है क्योंकि अखबार पत्रकारों की निजी संपत्ति नहीं है। यह एक सामाजिक शस्त्र है, जिसके द्वारा समाचारों का व्यापक संसार ज्ञात होता है। पत्र या पत्रकार मालिक निजी तौर पर मार्क्सवादी, लोकदली या भाजपाई हो सकता है, लेकिन इन निष्ठाओं को व्यक्त करने की सही जगह संपादकीय टिप्पणी या लेख है, खबर के कालम नहीं।

पत्रकार का यह दायित्व बन जाता है कि अधिक से अधिक तथ्य समाज के सामने लाए। लेकिन जब तथ्य न हों, तब क्या कल्पना से काम लेना चाहिए ? अयोध्या में कारसेवा के मामले में अनेक दैनिकों ने यही किया। अफवाहों, सरकारी चुप्पी और सरकारी बयानों के अंतर्विरोधों पर तथ्य तक पहुँचने की उनकी कोशिश जायज थी। लेकिन उन्हें यह भी स्पष्ट करना चाहिए था कि मौत का जो आँकड़ा वे पेश कर रहे हैं, उसका आधार क्या है। तब पाठक भी अपने स्तर पर यह तय कर सकता है कि वह किस आँकड़े को कितना विश्वसनीय माने। वस्तुतः समाचार पत्र का काम सत्य को सामने लाना उतना नहीं, जितना सत्य तक पहुँचने में पाठक की मदद करना है।

अलीगढ़ में साम्प्रदायिक दंगा इसलिए फैला क्योंकि कुछ अखबारों ने यह खबर छाप दी कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के परिसर में स्थित जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कालेज अस्पताल में दाखिल हिन्दू मरीजों और उनके परिचारिकों की वहाँ के डाक्टरों और नर्सों ने हत्या कर दी। दिल्ली के डाक्टरों की टीम ने अपनी जाँच के बाद बताया कि यह खबर बिलकुल निराधार थी। उस समय भी इस समाचार का अधिकारिक खंडन किया गया था, जिसे एक समाचार पत्र ने तो छाप दिया, पर दूसरे अखबारों ने अपना हठ बनाए रखा। अपुष्ट खबरों को खबर बनाकर छापना जितना गलत है, उससे भी अधिक है तथ्य उपलब्ध हो जाने के बावजूद अपनी बात पर अडिग रहना।

समाचार पत्रों को इस प्रकार की हठधर्मिता से दूर रहना चाहिए। इसमें संवाददाता को निष्पक्ष होकर अपनी भूमिका निभानी चाहिए। संवाददाता को कलम का माहिर होना चाहिए तथा भाषा पर उसका पूर्ण अधिकार होना चाहिए। एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान भी अपेक्षित है। समाचार बोध और उसकी परख जौहरी की भाँति होनी चाहिए। किसी घटना को देखने या सुनने के पश्चात् उसकी गहराई तक जाने की योग्यता का होना भी आवश्यक है। समाचार में आकस्मिकता ताजगी और विचित्रता का गुण अपेक्षित है। समाचारों में नवीनता की खोज करना संवाददाता का विशेष गुण है। रोज घटित होनेवाली घटनाएँ समाचार का रूप नहीं ले सकती। अधिक से अधिक वे सूचना हो सकती हैं। किसी जानवर ने मनुष्य के बच्चे को जन्म दिया तो यह ताजा समाचार हो सकता है।

सामान्यतः संवाददाताओं के चार वर्ग होते हैं ।

१. कार्यालय एवं स्थानीय संवाददाता

२. विशेष संवाददाता

३. नगरेतर संवाददाता

४. विदेश संवाददाता

१. कार्यालय संवाददाता समाचार पत्र के नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होते हैं। इनका कार्य-क्षेत्र वही नगर विशेष होता है। जहाँ पर वे रहते हैं और समाचारों का संकलन करते हैं। इन्हें सामान्यतः नगर में घूमकर या समाचारपत्र के दफ्तर में बैठकर समाचार पाने और लिखने पड़ते हैं।

२. विशेष संवाददाता वे होते हैं जो समाचारों का संकलन भी करते हैं और संकलित समाचारों की व्याख्या व विवेचना भी करते हैं। ये प्रायः दफ्तर की नियमित ड्यूटी से मुक्त रहते हैं।

३. नगरेतर संवाददाता वे होते हैं जो नगर से बाहर रहकर या वहाँ से सम्पर्क साधकर समाचार पत्र अथवा समाचार समितियों के लिए समाचार संकलित व प्रेषित करते हैं।

४. विदेश संवाददाता उन्हें कहा जाता है जो अन्य देशों में रहकर वहाँ के समाचारों को नियमित रूप से भेजते रहते हैं।

संवाददाता का प्रमुख कार्य समाचार संकलन है। समाचारों के आकलन में उसे बहुत ही निर्भीक और सत्यवादी होना चाहिए। उसे चाहिए कि वह उन सभी स्थानों और स्त्रोतों की जानकारी प्राप्त करे जहाँ से उसे रोज नई-नई खबरें प्राप्त हो सकती हो।

समाचार आकलन के कार्य में व्यक्तिगत सम्पर्क, साक्षात्कार और मेल-जोल की बड़ी भूमिका होती है। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक, अपराध जगत से सम्बन्धित और दुर्घटनाओं आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार के समाचारों के संकलन के लिए अनेक तरीके अपनाए जाते हैं। ये तरीके समाचार-संकलन के लिए काफी उपयोगी है। समाचार निम्न-लिखित स्थानों और स्त्रोतों से प्राप्त किए जाते हैं। इसके लिए सूझ-बूझ का होना भी जरुरी है।

१. लोकसभा, विधानसभा, विदेश मंत्रालय और निजी कारखाना आदि सर्वत्र जगह सूचना अधिकारी से प्राप्त किया जा सकता है।

२. संस्था–विशेष के निरीक्षण के बाद समाचार संकलन के लिए उस संस्था के प्रधान अधिकारी से मिलना चाहिए।

३. समाचार – संकलन के लिए सम्पर्क सूत्रों का पता टेलीफोन नम्बर आदि संवाददाता को रखना चाहिए।

४. समाचार – आकलन के लिए आत्मीयता अत्यन्त आवश्यक है। शिकायत करने वालों से दूर रहना चाहिए अन्यथा इसका बुरा प्रभाव समाचार पत्र पर पड़ सकता है।

५. समाचार एकत्र करने के लिए संवाददाता की तीव्र और गहरी पकड़ आवश्यक है।

६. समाचार संकलन का कार्य सतर्कता व साहसिकता का कार्य है। इसके लिए मनोवैत्रानिक भी होना चाहिए ।

७. क्राइम समाचार के लिए पुलिस अधीक्षक, थानेदार थाना अधिकारियों और अस्पतालों के डाक्टरों से व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए । क्राइम समाचारों को बिना सरकारी सूत्रों से पुष्टि किए बिना नहीं भेजना चाहिए ।

८. संवाददाता को अपने क्षेत्र के सरपंच, प्रधान, विधायक के अलावा वहाँ के खेत नदी, नालों, सड़कों, खानों और उद्योगों आदि से भी परिचित होना चाहिए । इस प्रकार के परिचय से समाचार – संकलन का कार्य सुगम हो जाता है ।

९. आर्थिक समाचारों के आकलन में सम्बन्धित विषयों का ज्ञान और उनके विकास और क्षति के मूल तत्वों की जानकारी सही समाचारों के संकलन करने में सहायक हो सकती है ।

१०. समाचार आकलन के लिए संवाददाता को क्या, कहाँ, कब, किसने, क्यों और कैसे आदि बातों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है ।

आर्थिक अभाव के कारण हर समाचार पत्र सभी स्थानों पर अपने संवाददाता नहीं रख सकते । इस कमी को पूरा करने के लिए संवाद – समितियों का गठन हुआ है । प्रत्येक देश की संवाद – समितियां

अन्य देशों की संवाद – समितियों से अवश्य ही जुड़ी होती हैं । उनकी आपसी तालमेल इतना वैज्ञानिक और कारगर है, कि दुनियां के किसी भी भाग की खबर दूसरे भाग में पहुँच जाती है । हमारे देश में आजकल अंग्रेजी की "प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया" और "यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया" तथा हिन्दी की समाचार भारती और हिन्दुस्तान समाचार ये चार संवाद – समितियाँ काम कर रही हैं । इसी प्रकार विश्व में – "ताश" "रायटर" डी.पी.ए. और इरना आदि संवाद समितियां समाचार प्रसारित करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं । जिनका सम्बन्ध हमारी संवाद – समितियों से है । सामान्यातः किसी संवाद – समिति से जुड़ा हुआ कोई संवाददाता अपने समाचार को दूर मुद्रक (टेली प्रिन्टर) के माध्यम से प्रसारित करता है । उसका यह समाचार केवल अपने देश में ही नही बल्कि उसकी संवाद – समिति से तालमेल रखने वाली दूसरे देशों की संवाद – समितियों के माध्यम से दुनिया के कोने–कोने में पहुँच जाता है ।

दो प्रकार के संवाददाताओं के नाम सुनकर आपके मन में कौतूहल उठना स्वाभाविक है, कि आखिर समाचार पत्र के संवाददाता और संवाद समिति के संवाददाता में क्या अन्तर है ? वस्तुतः अन्तर सिर्फ इतना ही है, कि समाचार पत्र के संवाददाता द्वारा भेजा समाचार उसी आशय के दूसरे समाचारों से कुछ भिन्न हो सकता है ।

उपर्युक्त बातों से आपके ज्ञात हो गया कि संवाददाताओं तथा संवाद – समितियों के द्वारा समाचार पत्रों को विभिन्न विषयों के स्थानीय देश और विदेश के समाचार मिलते रहते हैं । इसके अतिरिक्त इनके संपादक मंडल द्वारा तरह–तरह के लेख तथा पाठकों की विभिन्न रुचियों के अनुसार पाठ्य–सामग्री एकत्र की जाती है । विभिन्न माध्यमों से चित्रों की व्यवस्था भी की जाती है । फिर यही संपादक मंडल इस सभी सामग्री का संपादन और संशोधन करता है । संपादक मंडल के अन्तर्गत, संपादक, सहायक संपादक, वृत्त सम्पादक, मुख्य उप सम्पादक, उप सम्पादक, अनुवादक और प्रूफरीडर आदि होते हैं ।

समाचार पत्र कर्यालय में समाचारों के चयन का कार्य उपसंपादक, मुख्य उपसंपादक और वृत्त संपादक करते हैं । प्रत्येक समाचार पत्रों की अपनी अलग–अलग नीतियाँ होती हैं । वे अपनी नीतियों के अनुसार ही समाचार आकलित करते हैं । या इसे इम दूसरे रूप में कह सकते हैं कि समाचारों का चयन भी उसी विशेष नीति के अन्तर्गत किया जाता

है । सामान्य रूप से सभी समाचार पत्र उन प्रमुख घटनाओं का उल्लेख पहले और मुख्य पृष्ठ पर करते हैं जिनका सम्बन्ध कि सम्पूर्ण देश और विश्व से होता है और जिसका प्रभाव सम्पूर्ण मानवजाति पर पड़ता है। समाचार पत्रों की नीतियों के विषय में मैं "जनसत्ता और नवभारत टाइम्स" दो राष्ट्रीय समाचार पत्रों और एक स्थानीय समाचार पत्र "नवहिन्द टाइम्स" का उदाहरण देना चाहता हूँ ।

१. अमेरिका के नेतृत्व में बहुराष्ट्रीय सेनाओं द्वारा इराक और कुवैत पर चल रहे आक्रमण को दिनांक 29-1-91 में "नवभारत टाइम्स" मुख्य पृष्ठ पर सबसे पहले समाचार लिखता है, कि "इराक की भूमिगत कमान चौकियों पर बम वर्षा, समुद्र में तेल के फैलाव पर काबू" और जनसत्ता में " चार इराकी शहरों पर भारी बमबारी, नागरिकों के मारे जाने का अंदेशा" ।

"जनसत्ता नागरिकों के मृत्यु को लेकर आशंकित है । अतः उसकी दृष्टि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण से जुड़ी हुई है । "नवभारत टाइम्स" इराक के भूमिगत कमान चौकियों पर बमवर्षा की बात करता है । यहाँ इसका ध्यान सामान्य के प्रति नहीं है बल्कि युद्ध की विभीषिका की तरफ जाता है । इससे नवभारत की नीति अमेरिकी नीति के कुछ समर्थन में प्रतीत होती है ।

२. दूसरा समाचार नवभारत में है कि, "जोगेश्वरी के दंगों में ६ मरे" और जनसत्ता में जोगेश्वरी के दंगे में ६ जानें गईं, ६६ लोग घायल, ८ की हालत नाजुक स्थिति नियंत्रण में" जनसत्ता इस समाचार को मुख्य पृष्ठ पर सर्वोपरि स्थान देता है, क्योंकि इस प्रकार की घटनाओं का प्रभाव सम्पूर्ण देश की जनता पर पड़ सकता है । इस समाचार में प्राथमिकता जन-धन की हानि को दी गई है । घटना की विस्तृत जानकारी दी गई है और अन्त में राज नेताओं का दौरा घटनास्थल पर जल्दी करा दिया गया है । इसलिए इसमें राजनीति परस्ती दिखाई पड़ती है । मानवता की पीड़ा का भाव कम है ।

३. तीसरा समाचार जनसत्ता में है कि, "उग्रवादी संगठनों को बात-चीत का न्यौता नहीं और नवभारत में "आतंकवादियों को वार्ता का बुलावा दे पाना कठिन" । इसमें नवभारत टाइम्स विश्वसनीयता के कुछ अधिक करीब दिखाई देता है । जनसत्ता में इसका अभाव है ।

४. "पवार" मन्त्रिमंडल के पुनर्गठन समाचार को " जनसत्ता" मख पृष्ठ पर देता है क्योंकि इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण महाराष्ट्र प्रदेश से है। इसमें स्थानीय समाचार को अधिक महत्व दिया गया है। इससे स्थानीय समाचार नीति का समर्थन दिखाई देता है। "नवभारत टाइम्स" में यही समाचार तीसरे पृष्ठपर दिया गया है, जो कि महाराष्ट्र की जनता के लिए जानना बहुत आवश्यक है। स्थानीय समाचारों के प्रति इसकी नीति में अन्तर दिखाई पड़ता है।

५. नवभारत टाइम्स के सम्पादकीय का शीर्षक है – "गणतंत्र चिन्तन" और जनसत्ता में "लोक से न पूछ ले" दोनों सम्पादकियों मे राष्ट्रीय सरकार के विषय में राष्ट्रपति श्री. वेंकटरामन, श्री. अटल बिहारी वाजपेयी और श्री. वसंत साठे के विचार व्यक्त किए गए हैं। नवभारत में विस्तृत रूप से केवल अटल बिहारी वाजपेयी के विचारों से अवगत कराया गया है। यहाँ इसकी नीति व्यक्तिपरक प्रधान सी लगती है। जनसत्ता में राष्ट्रीय सरकार के विषय को लेकर श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री. साठे की नीतियों में विरोधाभास दिखाया गया है, और प्रत्येक के विचारों का स्पष्टीकरण किया गया है। यहाँ जनसत्ता की नीति साफ दिखाई पड़ती है।

दिनांक २९.२. १९९१ के स्थानीय समाचार पत्र "नवहिन्द टाइम्स" पणजी गोवा में अमेरिका के नेतृत्व में बहुराष्ट्रीय सेनाओं द्वारा इराक के शहरों पर भीषण हमले और खाड़ी में तेल के बहाव और उसमें आग लग जाने वाली दोनों घटनाओं का विशेष रूप से जिक्र किया गया है। खाड़ी में तेल के बहाव से गोवा का चिन्तित होना स्वाभाविक है क्योंकि गोवा भी समुद्र के किनारे बसा हुआ है और विश्व पर्यावरण के दूषित होने का सवाल है इसलिए समूची मानवता को मद्देनजर रखकर यह शीर्षक लिखा गया है। इसकी नीति गोवावासियों के कल्याण से भी जुड़ी हुई है क्योंकि कुछ गोवावासी खाड़ी देशों में कार्यरत हैं।

इस प्रकार प्रत्येक समाचार पत्रों की अपनी अलग-अलग नीतियां होती हैं और वे उसी नीति के अनुसार अपने – अपने समाचार पत्रों में अलग – अलग समाचार को रंग देते हैं।

समाचार पत्रों के कार्यालयों में गैर पत्रकार कर्मचारियों का एक बहुत बड़ा वर्ग होता है, जो इनकी छपाई का कार्य करता है, इस वर्ग

में इंजीनियर, तकनीशियन लाइनो तथा मोनो ऑपरेटर और कंपोजीटर इत्यादि होते हैं और इस यंत्रीकृत प्रक्रिया से गुजर कर संपादित सामग्री एक पूर्ण समाचार पत्र का रूप ग्रहण करती है ।

इस प्रकार यह समाचार पत्र जिसका कि हम बड़ी बेचैनी से इन्तजार करते हैं, प्रातः काल हमारे हाथ में पहुँच जाता है । जिससे कि हम अपनी मानसिक भूख को शांत करते हैं तथा देश विदेश के नूतन समाचारों से अवगत भी होते हैं ।

आज के युग में पत्रकारिता का कार्य बड़ा ही दुरूह हो गया है क्योंकि कुछ समय से भारतीय समाज का इस तरह से केन्द्रीकरण होता जा रहा है कि तथ्यों की शुचिता का कोई सम्मानजनक मूल्य ही नहीं रह गया है । राजनीति एवं आतंकवाद के प्रभाव के कारण देश के कुछ भाग अंधकारमय हो गए हैं । वहाँ के समाचारों पर गैर – सरकारी प्रतिबंध है । जो आतंकवादी कहते हैं वही छापना पड़ता है । उनका अपना मौलिक अस्तित्व खतरें में पड़ गया है । प्रतिबंध और प्रचार के तीरों से बिद्ध सच नामक चिड़िया को जिंदा सामने लाना समकालीन भारतीय पत्रकारिता के लिए एक तरह से सबसे बड़ी चुनौती हो गई है ।

आलेख पठन समाप्त होने के पश्चात् सत्राध्यक्ष महोदय ने समाचार आकलन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाचार आजकल हमारे दैनिक जीवन से जुड़ गया है । आज के संदर्भ में इसकी भूमिका बड़ी अहम् हो गई है । इस विषय पर काफी बातचीत हो सकती है । मैं आप सभी लोगों को चर्चा के लिए आमंत्रित करता हूँ ।

१. स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष की छात्रा कुमारी सुमन ने कहा कि आजकर समाचार पत्रों की विश्वसनीयता घटती जा रही है । इसके विषय में आपका क्या विचार है ?

डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र ने इस विषय पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आजकल अधिकांश समाचार पत्र किसी न किसी पूंजीपति – वर्ग से जुड़ा होता है और पूंजीपति का सम्बन्ध किसी न किसी राजनीतिक पार्टियों से होता है । पूंजीपति राजनीति के क्षेत्र में अपनी छवि बनाए रखने के कारण पार्टी विशेष की तरफदारी जाने अनजाने कर ही बैठता है । यहाँ पर उसकी अपनी व्यक्तिगत मजबूरियां भी होती हैं । इस

प्रकार समाचार पत्र कभी-कभी सत्य का प्रतिपादन तोड़-मरोड़ कर करते हैं । इसके कारण समाचार-पत्रों में विश्वसनीयता का अभाव दिखाई पड़ने लगता है ।

२. एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र सुनील सेठ ने पूछा कि "समाचार" में आपके विचार से कौनसी महत्वपूर्ण बात होनी चाहिए ?

मिश्र जी ने बताया कि वैसे तो मैंने अपने आलेख में समाचार के विषय में बहुत सारी बातें कही हैं परन्तु फिर भी जब आपने पूछा है, तो मेरे विचार से समाचार में नवीनता और सत्यता का गुण प्रधान होना चाहिए ।

३. हिन्दी प्राध्यापिका छाया ने कहा कि समाचार की नवीनता और सत्यता को पहचानने का कार्य विशेष रूप से संवाददाता का होता है। संवाददाता के विषय में भी आपने बहुत कुछ लिखा है लेकिन मैं उसके कुछ मुख्य गुणों के विषय में जानना चाहती हूँ ।

मेरे विचार से संवाददाता को समाचार के प्रति नीर-क्षीर विवेक वाला होना चाहिए । हठधर्मिता से दूर रहना चाहिए । समाचारों का आकलन बहुत ईमानदारी और निष्ठा से करना चाहिए । इसका कारण है कि समाचारपत्र समाज देश एवं अन्य विषयों की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है । समाचार संकलन करने के लिए उसे जौहरी की भूमिका अदा करनी पड़ती है । इसके अतिरिक्त संवाददाता में अनेक गुणों का होना जरूरी है, जिसकी चर्चा मैंने प्रपत्र में की है ।

४. कुमारी मीरा स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष की छात्रा ने कहा कि आपने अपने आलेख में लिखा है कि समाचार पत्र अनेक विविधताओं से भरा होता है और उसमें विज्ञापन की बात कहकर आगे बढ़ जाते हैं । आज के युग में विज्ञापन समाचार पत्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाता जा रहा है । इसका उल्लेख आपने आलेख में क्यों नहीं किया ?

मीरा जी मैं आपकी बात से पूर्ण रूप से सहमत हूँ । क्योंकि आज के युग में पैसा प्रधान हो गया है और विज्ञापन के द्वारा समाचारपत्रों को आर्थिक रूप से काफी फायदा भी होता है परन्तु मेरा ध्यान यहाँ मुख्य रूप से समाचारों से संकलन पर ही केन्द्रित था इसलिए उस दिशा में विचार न कर सका ।

५. कुमारी सुनीता एम.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा ने पूछा कि समाचार-पत्रों की नीतियों के विषय में कृपया अपना विचार व्यक्त करने की कृपा करें ।

"नवभारत टाइम्स" और "जनसत्ता" तथा "नवहिन्द टाइम्स" समाचार - पत्रों के माध्यम से उनकी अलग अलग नीतियों का उल्लेख मैं आलेख में कर चुका हूँ। संक्षिप्त रूप से इतना, ही कहना चाहूँगा कि समाचार-पत्रों की अपनी अलग-अलग नीतियाँ होती हैं और उसी के तहद वे समाचारों को आकलित करते हैं ।

६. कुमारी जयश्री राय एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा ने पूछा कि आज के युग में पत्रकारिता का कार्य दुरूह क्यों होता जा रहा है ?

मेरे विचार से राजनीतिक कुचक्र एवं आतंकवाद के कारण तथ्यों की पवित्रता का कोई सम्मानजनक मूल्य रह ही नहीं गया है । आज के युग में सत्ता लोलुपता और स्वार्थपरता के कारण सारे मानवीय मूल्य समाप्त से होते दिखाई दे रहे हैं । भय और आक्रान्तता का ऐसा माहौल पैदा हो गया है, कि आतंकवादी जो चाहता है वही हो रहा है, ऐसे वातावरण में पत्रकारिता अपनी वास्तविक भूमिका निभा पाए यह निश्चय ही एक कठिन-कार्य है ।